विचार बिन्दु

आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्म संयम, केवल यही तीन जीवन को परम शांति सम्पन्न बना देते हैं। –टेनीसन

आदर्श की सिर्फ बातें होती हैं, वह व्यवहार में नहीं लाया जाता

भारतीय जनमानस इस मायने में विश्व के अन्य समुदायों से अलग है कि वह एक तरफ तो ऊंचे आदर्श रखता है और उनकी बढ़-चढ़ कर बातें करता है, उन्हें पूजता है और हमेशा उनको अपने जीवन में उतारने के लिए व्यठा नज़र आता है, मगर दूसरी तरफ व्यवहार में वह सबसे अधिक अपने उन्हीं आदर्शों को ध्वस्त करता है। यह भारतीय समाज का अनोखा विरोधाभास है। अपने आदर्शों के प्रतीक के रूप में वह राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में तो पूजता है परंतु जब राम जैसी मर्यादाएं निभाने का वक़्त आता है तब वही भारतीय जन मानस राम का गुणगान करने वाली तुलसी रामायण के प्रसंगों का सहारा लेकर कन्नी काट जाता है या गीता के कृष्ण का सहारा लेने लगता है। अपने आप को बड़ा धार्मिक बताने और समझने वाला भारतीय जनमानस अपनी सुविधा के लिए एक नया आपात् धर्म ईजाद कर लेने में देर नहीं लगाता। आदर्शों की पालना न कर पाने और उसके विपरीत कर्म करने को भी आपात् धर्म मान लेना यहां के लोगों की फितरत रही है। दिलचस्प बात यह है कि आपात् धर्म की परिस्थिति कब बनती है, इसका फैसला करने वाले वे खुद ही बन जाते हैं। इसके उदाहरण इन दिनों हमें लोकतान्त्रिक विधि से चुनी हुई सरकारों के कामकाज में खुल कर मिलते हैं। सरकारों का धर्म हैं संविधान के अनुसार चलना। लेकिन सभी निर्वाचित सरकारें उनमें गलियां निकालने में अद्भुत महारथ हासिल कर चुकी हैं। जब भी उन्हें संवैधानिक प्रावधानों से मुश्किल आने लगती है, वे संविधान के संशोधन के प्रावधान का उपयोग करने में एक क्षण भी नहीं लगाती। भारतवासियों के इस दोहरे व्यवहार को समाजवादी वैचारिक नेता राममनोहर लोहिया ने कुछ यूं समझाया था:– हर एक आदमी के दिमाग में, खास तौर से हिंदुस्तानियों के, दो खांचे होते हैं। एक सगुण खांचा और दूसरा निर्गुण खांचा। वे कहते थे कि हमारे यहां सिर्फ आरती उतारी जाती है। ठोस बहस, उसूलों के असली मतलब को निकालने वाली बहस नहीं होती। दार्शनिक बहस नहीं होती। दिमाग के दो खांचों का कोई हजार–दो हजार बरस का किस्सा है। दो खांचों के बीच ऐसा विभाजन दुनिया में उतना और कहीं नहीं मिलता जितना हमारे यहां है। लोहिया का कहना था कि इसके बहुत से सबब रहे होंगे। एक सबब जो ऊपरी तौर पर देखने में अच्छा लगने वाला सबब है कि हिंदुस्तान के बड़े–बड़े विचारकों ने – सोचने वालों ने – अपने दिमाग को पूरी इजाजत और खुली छूट देना चाहा जिसमें कोई रुकावट न रहे, वह निर्बाध हो। उन्होंने इतनी सम्पूर्ण और मुकम्मल आज़ादी बहुत बड़ी कीमत दे कर हासिल की। वह आज़ादी थी दिमाग के दो खांचे बना लेना। पूरी दिमागी आज़ादी को हासिल करने के लिए दिमाग का एक दूसरा खांचा बनाना पड़ा ताकि आज़ाद विचरण करने वाले दिमाग पर दूसरे साधारण वाले खांचे का असर न पड़े। यह दूसरा खांचा ऐसा बना लिया कि जो हालात चालू हैं उसे चालू रखो, उससे छेड़खानी मत करो। नहीं तो गड़बड़ पैदा हो जाएगी। और पहले खाने को ऐसा बनाये रखो कि दिमाग जो सूत कातता है वह सूत टूटे नहीं। उनका यह भी कहना था कि आदर्श और व्यवहार के दो खांचों की यह व्यवस्था अच्छे वक़्त में तो ठीक थी, परंतु आज के युग में जो दुनिया का सबसे बेरहम और निर्दयी युग है यह व्यवस्था हमारे लिए परेशानी का सबब बन रहीहै। इस तरह लोहिया ने समझाया कि भारत में किस प्रकार आदर्श और व्यवहार में फर्क आ गया।

लोकतान्त्रिक व्यवस्था और सामंतशाही में जो बड़ा फर्क है वह है कि एक में शासन को नियंत्रित करने वाले अधिनायक के निर्देशन में आम जनता चलती है और जिसमें वह अनुयायी की भूमिका में होती है। दूसरे में आमजन अपने भाग्य का खुद नियंता होता है। परंतु पिछले हजार वर्षों में इस भूभाग के लोग बाहुबल के आधार पर शासन करने वालों के नियंत्रण मेंजीते हुए अपने कोइस प्रकार ढाल चुके हैं कि उन्हें गुलामी का चलन सुविधाजनक लगने लगा है। लोहिया द्वारा बताया गया दिमाग का यह दूसरा खांचा यहां के लोगों को जैसा चलता है चलने दो की तरफ धकेलता रहता है ताकि बदलाव का फैसला करने की उलझन से बचा जा सके। कहते हैं जब बेंजामिन फ्रैंकलिन अमरीकी संविधान के दूसरे प्रारूप के पास होने के बाद इंडेपेन्डेन्स हॉल से निकले तो सड़क पर एक महिला ने उन्हें रोक लिया। महिला ने उनसे पूछा मिस्टर फ्रेंकलिन आपने हमें किस तरह की सरकार दी है? फ्रेंकलिन का जवाब था: एक गणतंत्र, यदि आप इसे बचाये रख सकें! किसी भी गणतांत्रिक देश की जिम्मेदारी कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के हाथ में नहीं होती है, सबकी होती है। जनता तभी तक मजबूत होती है और अत्याचार से मुक्त रहती है जब तक उसके हर सदस्य को अपने कर्तव्य याद रहते हैं। खुल कर बोलना, सवाल करना, सत्य की मांग करना भी गणतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य होता है। प्रत्येक के लिये यह जानना जरूरी है कि लोकतंत्र कोई मुफ़्त की सवारी नहीं है। यह बात बार–बार याद दिलाने की जरूरत है। ऐसा शायद वे लोग भी चाहते थे जिन्होंने भारतीय संविधान की रचना करके ब्रितानवी साम्राज्यवाद से आज़ाद होने के बाद हमारे देश को एक गणतांत्रिक राष्ट्र बनाया जिसमें प्रत्येक नागरिक की समान हैसियत और भागीदारी की व्यवस्था रखी। इस भागीदारी की शुरुआत होती है समान मताधिकार से। विडंबना है कि आज सत्तर साल से अधिक बीत जाने के बाद भी यह विचार चिंता पैदा करता है कि क्या हम भारत के लोग इस गणतंत्र को बचाये रख पाएंगे? बावजूद अनेकों झंझावातों के भारतीय लोकतंत्र इस मायने में पूरी तरह सफल साबित हुआ है कि देश में लोकतान्त्रिक चुनाव नियमित और निर्विघ्न सम्पन्न होते रहे हैं जिनके नतीजे अनेक बार नेताओं की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं भी रहे हैं। भारत के लोगों ने मुश्किल घड़ियों में भी पूरी परिपक्वता का परिचय दिया है। लेकिन यह मानने में भी हमें कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि आजादी के बाद के हमारी राजनीति और समाज के नेता इसमें फिसड्डी साबित हुएनजर आते हैं। जिन राजनेताओं से लोकतान्त्रिक नेतृत्व की अपेक्षा की गई वे खुद अपने और अपनों के लिए होते चले गये। पुरानी सामंती परम्पराएं उन्हें लुभाई और वे उन परंपराओं को नए आडंबरों के साथ लोकतान्त्रिक मुखौटा पहनाने में सफल रहे। गरीब की तकदीर बदलना नहीं, बल्कि खुद को राज में स्थापित किये रखना उनका लक्ष्य हो गया। प्रतिस्पर्धी चुनावी राजनीति में जाति, धर्म, भाषा, समुदाय, प्रांत और न जाने क्या–क्या के नाम पर वोट बटोरना उन्हें आसान लगा। ऐसे में सभी के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा और स्वास्थ्य की जगह नेताओं की सोच पर खुद का मुनाफा हावी होता चला गया। राजनेताओं का सत्ता का व्यक्तिगत लालच इतना बढ़ा कि उसने न केवल पार्टी आदर्शों को ध्वस्त किया बल्कि पार्टी को ही अपने कब्जे में कर लेने केजतन कर लिए। ऐसे में संविधान के पवित्र अवदान – निर्वाचन प्रक्रिया – को दूषित करने का उद्यम होना ही था। इसे रोकने के लिए जब लोक का दबाव बढ़ा तब चुनाव सुधारों के कदम भी उठे। उन्हीं कदमों के चलते देश में आदर्श आचार संहिता पहली बार 1960 के चुनावों के दौरान अपनाई गई। राजनीतिक दलों के लिए एक आदर्श आचार संहिता बनाने का विचार देने का ऐतिहासिक श्रेय केरल राज्य को जाता है, जहां फरवरी 1960 में राज्य विधान सभा के आम चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों के पालन के लिए पहली बार एक आचार संहिता बनाई गई। तब से लेकर अब तक आदर्श आचार संहिता ने कई सोपान पूरे किए हैं। मगर अब आमतौर पर उनकी धज्जियां उड़ती ही देखते हैं क्योंकि हमारे यहां आदर्शों और व्यवहार में अंतर होता है। चुनाव आचार संहिता राजनीतिक दलों, उनके प्रचारकों और उम्मीदवारों द्वारा पालन किए जाने वाले दिशानिर्देशों का एक ब्यौरा होता है जिसे चुनाव आयोग स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए लागू करता है। मगर क्या उनकी पालना सुनिश्चित होती है? इस सवाल का जवाब प्रत्येक भारतीय नागरिक बखूबी जानता है। भारतीय संविधान कहता है कि ऐसी कोई कृत्य न हो जिससे नागरिकों के बीच मतभेदबढ़े या लोगों के बीच आपसी नफरत पैदा हो या विभिन्न जातियों और समुदायों, धार्मिक या भाषाई वर्गों के बीच तनाव पैदा हो। किन्तु हम बहुतेरे राजनेताओं को इन भेदों को बढ़ावा देते ही पाते हैं। अब तो समाज में भाईचारे का ताना–बाना छिन्न–भिन्न करने की राजनेताओं में होड मची दिखती है। किसी भी तरह सत्ता पाने और वहाँ बने रहने के लिये जाति या सांप्रदायिक भावनाओं को उभारना आम चलन हो गया है। सरकारी साधनों का व्यक्तिगत या दलीय हितों के लिए प्रयोग सामान्य बात हो चली है। भ्रष्टाचारी अब समाज में नीची निगाहें करके नहीं नायक के दंभ के साथ घूमता है। नैतिक और आर्थिक भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्ति को पकडे जाने पर भी अब कोई अपराधबोध नहीं होता। लगता है समूचे तंत्र को घुन लग गया है क्योंकि हमारे आदर्श और व्यवहार में कोई साम्यता नहीं हैं। इससे राज्य प्रशासन की व्यवस्था कर्मकांड बन कर रह गई है जिसमें लोकसेवा का तत्व लुप्त हो चला है। लोकसेवकों को तो अब आदर्श की बात परेशान करती है इसीलिए संविधान के प्रावधानों और निर्देशों से बचने की गालियां निकालने का हुनर राजनेताओं ने कुशलता से साध लिया है।

> **नैतिक और आर्थिक भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्ति को पकड़े जाने पर भी अब कोई अपराधबोध नहीं होता। लगता है समूचे तंत्र को घुन लग गया है क्योंकि हमारे आदर्श और व्यवहार में कोई साम्यता नहीं हैं। इससे राज्य प्रशासन की व्यवस्था कर्मकांड बन कर रह गई है जिसमें लोकसेवा का तत्व लुप्त हो चला है।**

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

छात्राओं के लिए रोजगार अभियान : एक जरूरी पहल

प्रो. अशोक कुमार

छात्राओं के लिए रोजगार / नौकरी के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक अभियान की आवश्यकता है। भारत में छात्राओं/महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने और समाज में लैंगिक समानता लाने के लिए यह बेहद जरूरी है।

रोजगार अभियान की आवश्यकता क्यों है? छात्राओं / महिलाओं को अपने जीवन मे विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि:–

रोजगार के अवसरों की कमी: कई क्षेत्रों में अभी भी महिलाओं के लिए पुरुषों के बराबर रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं हैं। लैंगिक पूर्वाग्रह: कई कार्यस्थलों पर महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है, उन्हें कम वेतन दिया जाता है और उन्हें नेतृत्वकारी भूमिकाएं देने में संकोच किया जाता है। घरेलू जिम्मेदारियां:– महिलाओं को घर और परिवार की जिम्मेदारियां निभाने के साथ–साथ करियर बनाने में भी संतुलन बनाना होता है।

लैंगिक असमानता:– आज भी कई क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अवसर नहीं मिल पाते हैं। रूढ़िवादी सोच: समाज में कई जगह महिलाओं को सिर्फ घर के काम तक सीमित करने की सोच पाई जाती है। शिक्षा के बावजूद रोजगार:– कई महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी रोजगार नहीं पा पाती हैं। कौशल विकास:– कई बार महिलाओं में आवश्यक कौशल का अभाव होता है, जिसके कारण उन्हें नौकरी मिलने में दिक्कत होती है।

रोजगार अभियान के माध्यम से क्या किया जा सकता है?

जागरूकता फैलाना:– महिलाओं को उनके अधिकारों और करियर के विकल्पों के बारे में जागरूक किया जा सकता है। कौशल विकास:– महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक कौशल विकसित करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा सकता है। रोजगार मेले:– महिलाओं के लिए विशेष रोजगार मेले आयोजित किए जा सकते हैं। मेंटोरशिप:– अनुभवी महिलाओं को युवा महिलाओं को मेंटर के रूप में दिया जा सकता है। सरकारी नीतियां:– महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए सरकार को नीतियां बनानी चाहिए। निजी क्षेत्र का सहयोग:– निजी क्षेत्र को भी महिलाओं को रोजगार देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

छात्राओं / महिलाओं के लिए नौकरी अभियान के लाभ

आर्थिक स्वतंत्रता:– महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सकेंगी। समाज में सम्मान:– महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान मिलेगा। देश का विकास:– देश का विकास होगा क्योंकि महिलाएं भी राष्ट्र निर्माण में योगदान देंगी।

आप इस अभियान को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं?

सामाजिक मीडिया:– सोशल मीडिया पर जागरूकता फैलाएं। स्कूलों और कॉलेजों में कार्यक्रम:– स्कूलों और कॉलेजों में सेमिनार और कार्यशालाएं आयोजित करें। स्थानीय सरकारों से संपर्क करें:– स्थानीय सरकारों से इस मुद्दे पर बात करें और उनसे सहयोग मांगें। ञ्उध् के साथ मिलकर काम करें:– ञ्उध् के साथ मिलकर महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम करें। कौशल विकास कार्यक्रम:– छात्राओं को विभिन्न कौशल विकसित करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाए, जैसे कि कंप्यूटर कौशल, भाषा कौशल, आदि। इंटर्नशिप और प्रशिक्षण कार्यक्रम:– छात्राओं को विभिन्न कंपनियों और संगठनों में इंटर्नशिप और प्रशिक्षण के अवसर प्रदान किए जाएं।नियोक्ताओं के साथ सहयोग:– नियोक्ताओं को महिलाओं को रोजगार देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।सरकारी नीतियां:– सरकार को महिलाओं के रोजगार को बढ़ावा देने के लिए नीतियां बनानी चाहिए।

कुछ संभावित नौकरी के क्षेत्र:–

उद्योग: सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, डेटा एनालिटिक्स, डिजिटल मार्केटिंग! शिक्षा: शिक्षिका, काउंसलर, प्रशिक्षक स्वास्थ्य: नर्स, डॉक्टर, फार्मासिस्ट, वित्त: बैंकिंग, बीमा, वित्तीय सलाहकार, मीडिया और मनोरंजन: पत्रकार, लेखक, कलाकार सामाजिक कार्य: सामाजिक कार्यकर्ता, ञ्उध् में कार्य, उद्यमिता: अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना। सरकार का लक्ष्य है कि हर महिला आत्मनिर्भर बने और समाज में अपनी भूमिका निभा सके।

भारत सरकार महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिए कई पहल कर रही है। इन प्रयासों का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और देश के विकास में उनकी सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करना है।

कुछ प्रमुख पहल इस प्रकार हैं:–

स्वयं सहायता समूह (एप्उ): इन समूहों के माध्यम से महिलाओं को छोटे उद्योगों को शुरू करने और चलाने के लिए वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (श्एर्ई) को बढ़ावा: सरकार महिलाओं को श्एर्ई शुरू करने और बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। इसके लिए सरकार द्वारा ऋण सुविधाएं, सब्सिडी और अन्य प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है।

मुद्रा योजना: यह योजना महिला उद्यमियों को आसानी से ऋण उपलब्ध कराती है, जिससे वे अपने व्यवसायों का विस्तार कर सकती हैं।

कौशल विकास कार्यक्रम: सरकार विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को रोजगार योग्य बना रही है। इन कार्यक्रमों में डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि शामिल हैं।

सब्सिडी और प्रोत्साहन: सरकार महिला उद्यमियों को कई प्रकार की सब्सिडी और प्रोत्साहन प्रदान करती है, जैसे कि कर छूट, ब्याज सब्सिडी आदि।

लघु उद्योगों को बढ़ावा: सरकार लघु उद्योगों को बढ़ावा देकर महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर रही है।

पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी: सरकार पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा दे रही है, जिससे उन्हें सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाने का मौका मिल रहा है।

कानूनी सुधार: सरकार महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए कानूनी सुधार कर रही है, जिससे उन्हें कार्यस्थल पर समान अवसर मिल सकें।

इनके अलावा, सरकार कई अन्य क्षेत्रों में भी महिलाओं के रोजगार को बढ़ावा देने के लिए काम कर रही है, जैसे कि:–

कृषि: कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए कई योजनाएं चल रही हैं।

उद्योग: महिलाओं को उद्योगों में रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए नीतियां बनाई जा रही हैं।

सेवा क्षेत्र: सेवा क्षेत्र में महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। छात्राओं/महिलाओं के लिए रोजगार/नौकरी अभियान एक व्यापक प्रयास है, जिसमें सरकार, निजी क्षेत्र, गैर–सरकारी संगठन और समुदाय सभी को मिलकर काम करना होगा। एकजुट होकर हम छात्राओं/महिलाओं को सशक्त बना सकते हैं और उन्हें एक बेहतर भविष्य दे सकते हैं।

छात्राओं/महिलाओं के लिए रोजगार अभियान एक व्यापक प्रयास है, जिसमें सरकार, निजी क्षेत्र, गैर–सरकारी संगठन और समुदाय सभी को मिलकर काम करना होगा। एकजुट होकर हम महिलाओं को सशक्त बना सकते हैं और उन्हें एक बेहतर भविष्य दे सकते हैं।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष
राजस्थान विश्वविद्यालय

खाद की कालाबाजारी करने पर तीन दुकानदारों के लाइसेंस निरस्त

किसानों से निर्धारित दर से अधिक राशि वसूलने व कई अनियमितताओं को लेकर कार्यवाही

गंगापुर सिटी, (निसं)। खाद की कालाबाजारी को लेकर मिल रही शिकायतों पर कृषि विभाग की टीम ने मंगलवार को कार्रवाई की। इस दौरान किसानों से निर्धारित दर से अधिक राशि वसूलने सहित अन्य अनियमितताओं को लेकर तीन दुकानदारों के लाइसेंस निलंबित कर दिए गए।

कृषि विभाग को यूरिया, डीएपी खाद पर निर्धारित दर से किसानों से अधिक राशि वसूलने की शिकायत मिल रही थी। इस पर मंगलवार को अतिरिक्त निदेशक भरतपुर देशराजसिंह के नेतृत्व में गंगापुर सिटी की स्थानीय कृषि विभाग की टीम के द्वारा गंगापुर सिटी सहित आसपास के क्षेत्र में खाद बीज की दुकानों का औचक निरीक्षण किया। टीम के द्वारा करीब 20 से अधिक दुकानों का निरीक्षण किया गया। इस मौके पर निरीक्षण के दौरान पुरानी अनाज मंडी में निर्धारित दर से अधिक दर पर यूरिया खाद बेचते हुए पाए जाने पर एक दुकान का लाइसेंस निलंबित कर दिया। साथ ही टीम ने खाद–बीज की दुकानों पर निरीक्षण के दौरान खाद बीज के नमूने लिए।

> **कृषि विभाग की टीम ने खाद-बीज की दुकानों पर निरीक्षण के दौरान खाद बीज के नमूने लिए**

कृषि विभाग के निदेशक राधेश्याम मीणा ने बताया कि इससे पहले भी 10 अक्टूबर को निरीक्षण के दौरान टीम के द्वारा खाद बीज की दुकानों का निरीक्षण किया गया था और निरीक्षण के दौरान निर्धारित दर से अधिक राशि उर्वरक पर वसूलने और अन्य अनियमितताओं को लेकर तीन दुकानदारों के लाइसेंस निरस्त कर दिए गए थे।

गंगापुर सिटी में खाद बीज की दुकानों का कृषि अधिकारियों की टीम ने निरीक्षण किया।

कॉलोनी में घुसकर सियार वन्यजीव ने लोगों को घायल किया

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर की संजय कॉलोनी में सियार आने से दहशत फैल गई। भीलवाड़ा नगर निगम मेयर राकेश पाठक से फोन पर सूचना प्राप्त हुई कि गायत्री शक्तिपीठ मंदिर रोडवेज बस स्टेशन में एक सियार वन्यजीव ने कुछ लोगों को घायल किया है।

सूचना पर टीम मौके पर पहुंची टीम ने मंदिर परिसर की सीमा को सर्च किया। इतने में ही संजय कॉलोनी वार्ड नंबर 36 से दोबारा पार्षद प्रत्याशी राजेंद्र जैन द्वारा फोन पर सूचना प्राप्त हुई कि हमारे गली में सियार देखा गया। इस पर वन विभाग के पूर्व वनपाल छोटूलाल कोली, वाइल्ड एनिमल रेस्क्यू सेंटर वन्य जीव रक्षक कुलदीप सिंह राणावत, वन विभाग व नगर निगम की संयुक्त टीम संजय कॉलोनी मौके पर पहुंची। टीमों के पहुंचने के बाद गहन ऑपरेशन शुरू किया गया।

भीलवाड़ा की संजय कॉलोनी में सियार आने से दहशत फैल गई।

क्षेत्र में सर्चिंग में सियार कहीं नहीं दिखा। वन्यजीव की समस्या को देखते हुए टीमों को लगातार गश्ती पर लगाया गया है। क्षेत्रवासियों को हिदायत दी गई कि जहां कहीं भी वन्यजीव दिखे इसकी सूचना तुरंत वन विभाग, संबंधित थाना और वन्य जीव रक्षक दल टीम भीलवाड़ा को दी जाए।

कुल की रस्म के साथ बड़े पीर साहब का उर्स संपन्न

अजमेर, (कासं)। तारागढ़ की पहाड़ी पर स्थित बड़े पीर की दरगाह पर शेख अब्दुल कादिर जिलानी का तीन दिवसीय उर्स मंगलवार को कुल की रस्म के साथ संपन्न हुआ। बड़े पीर की दरगाह पर ही एक दिन अनोखी अदालत भी लगी। अदालत में समाज के लोगों के आपसी विवादों का पंचायत के सदस्यों ने निपटारा कराया।

मुतवल्ली सैय्यद अफसर अली ने बताया कि तारागढ़ की दो हजार फीट ऊंची पहाड़ी पर हजरत पिराने पीर शेखर अब्दुल कादिर जिलानी का तीन दिवसीय उर्स मनाया जा रहा है। बड़े पीर का चिल्ला शरीफ के नाम से मशहूर दरगाह पर चादर और झंडे की रस्म अदा की गई। मंगलवार को उर्स के तीसरे दिन दोपहर 11 बजे मुतवल्ली सैयद अफसर अली की सदारत में महफिल शुरू हुई। दरगाह की शाही चौकी के कव्वालों ने कलाम पेश किए और रंग पढ़ा गया। उर्स की कुल की रस्म के बाद दुआ और लंगर का भी आयोजन के साथ उर्स संपन्न हुआ।

मुतवल्ली सैय्यद अफसर अली ने बताया कि इस उर्स में देश भर से जायरीन शिरकत करने अजमेर आते हैं। खास तौर पर घुमंतू जाति समुदाय के मुस्लिम अपने एक दिन की अनोखी अदालत में विवादों का निपटारा करने के लिए आते हैं। चिल्ला शरीफ पर लगी अदालत में समाज के पंच–पटेल और सरपंच मिलकर समाज के लोगों में मन–मुटाव और लड़ाई झगड़े सहित कई गंभीर मालातों में फैसले भी सुनाते हैं। पूरा एक साल इंतजार कर अजमेर में बड़े पीर साहब के चिल्ला शरीफ पर ही पंच पटेलों के बीच रखते हैं और अदालत जो फैसला सुनाती है उसे वे कबूल करते हैं।

राशिफल

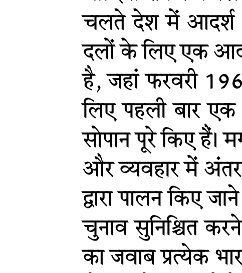

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 16 अक्टूबर, 2024

अश्विन मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र सायं 7:18 तक, ध्रुव योग दिन 10:09 तक, गर करण दिन 10:30 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कन्या, चन्द्रमा–मीन, मंगल–मिथुन, बुध–तुला, गुरू–वृष, शुक्र–वृश्चिक, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवियोग सायं 7:18 तक है। भद्रा रात्रि 8:41 से आरम्भ होगी। आज चान्द पूर्णिमा व्रत, शरद पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, पंचक है और कुबेर और लक्ष्मी पूजा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:22 तक, शुभ 10:47 से 12:12 तक, चर 3:03 से 4:29 तक, लाभ 4:29 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:31, सूर्यास्त 5:54

मेष
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी।

वृष
व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक/वित्तिय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिवार में शुभ–मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

सिंह
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

धनु
घर–परिवार में आपसी मतभेद आपसी मतभेद हो सकते हैं। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कुंभ
घर–परिवार में धार्मिक–सामाजिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
वर्तमान में चल रहा मानसिक तनाव दूर होगा। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।